



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)
प्रधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

स. 210]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 13, 1992/वैशाख 23, 1914

No. 210]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 13, 1992/VAISAKHA 23, 1914

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

इस भाग में भिन्न पृष्ठ तंत्रों दी जाती है जिससे कि यह अलग तंत्रों के रूप में
रखा जा सके

जल भूतल परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पक्ष)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 मई, 1992

मेर. का. नि. 487(अ)—केन्द्रीय सरकार, महाप्रत्नन
स्थाप अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 132
की उपधारा (1) के साथ पछिं धारा 124 की उपधारा
(1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए, मुख्य
पत्तन अधिसूचना मंडल द्वारा बनाए गए और इस अधिसूचना के
साथ संलग्न अनुसूची में मुख्य फत्तन (लायसेसिंग एन्ड
कंट्रोल ओफ पायलट्स) (संशोधन) विनियम, 1992 का
अनुमोदन करती है।

2. उक्त विनियम इस अधिसूचना के सरकारी
संघीय संसद में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

अनुसूची

मुख्य पोर्ट (पाइलटों का लाईसेसिंग
और नियंत्रण) अधिनियम, 1975

मुख्य बंदरगाह (मेजर पोर्ट ट्रस्ट) अधिनियम
1963 (1963 की 38) की धारा 28 के खंड (घ)
द्वारा प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते हुए मुख्य पोर्ट
ट्रस्ट विश्वस्त मंडल उक्त अधिनियम की धारा 124 की
उपधारा (1) की आवश्यकतानुसार केन्द्र सरकार का अनुमोदन
लेकर मुख्य पोर्ट ट्रस्ट (पाइलटों की लाईसेसिंग और नियंत्रण
विनियम, 1975 में संशोधन करते हुए निम्न विनियम
बनाता है:—

1. संक्षिप्त शीर्षक और प्रारम्भ :

(i) ये विनियम मुख्य पोर्ट (पायलटों का लाईसेसिंग
और नियंत्रण) विनियम, 1992 कहलाएं जाएँ,

(ii) ये विनियम सरकारी राजस्व में केन्द्र सरकार की
मंजूरी के प्रकाशन की तिथि को लागू होंगे।

२. मंत्रई पोर्ट (पायलटों का लाइसेंसिंग और नियंत्रण) विनियम, १९७५ में—

(i) विनियम ६ के उपनियम (i) में उपविभिन्नम् (१क) के स्पष्ट में निम्न शामिल किया जाएः :

"(१क) निम्न परिवीक्षाधीनों में ग्रथित लाईसेंस रद्द कर सकते हैं।

(क) आचरण और अनुशासन विनियम के अन्तर्गत मार्किन किया गया दुर्घटना और/अथवा दुर्घटना,

(ख) व्यावसायिक दुर्घटना,

(ग) नौजहन दुर्घटना-जहाँ व्यावसायिक विनियम के बारे में बहेहि नियम हुआ हो अथवा दुर्घटना की जांच के बाद लापरवाही मार्किन हो गई हो,

(घ) जहाँ सभूती दुर्घटना की जांच के लिए गठित औपचारिक जांच न्यायालय इम दुर्घटना के लिए पायलट को जिम्मेदार ठहराता हो,

(च) विनियम ६(२) को आवश्यकतानुसार भेदभाव का समर्पित पर अनुज्ञित पव लॉटाया नहीं गया हो,

(छ) पायलट कार्य के लिए वैशिष्ट्य दाइट में प्रयोग्य पाया गया हो।"

(ii) विनियम (८) के उपनियम (i) के बारे में निम्न प्रावधान जोड़ दिया जाएः—

"विनियम के परिवीक्षाधीन प्रणिक्षण की ग्रथित निम्न पर्यालू और वैशिष्ट्य काणों के लिए यह महीने ऊपर बढ़ाई जा सकती है:

(i) अभ्यार्थी व्यर्ग ग्रप्ती वीमार्गी की वजह से प्रणिक्षण के अपेक्षित चरण पूरा करने में अमरमर्थ हो अथवा पर्यालू और वैशिष्ट्य काणों प्रथवा गान्धीय आपाकानीन स्थिति इत्यादि की वजह से उसे छुट्टी पर जाता पड़े।

(ii) मंत्रई पोर्ट द्वारा अथवा भारत सरकार के हित में परिवीक्षाधीन पायलट का (पूर्व करार) ड्रेजिंग मास्टर, बर्थिंग मास्टर इत्यादि के स्पष्ट में ग्रथवा प्रकार का, कोर्पस मौखिक आवश्यक होता हो और इम प्रकार अभ्यर्थी आवश्यक प्रणिक्षण, पूरा करने में असमर्थ हो।

(iii) अगर कोई अभ्यर्थी (विनियम ११ के अन्तर्गत) नियर्वात १२ महीने की ग्रथित में किसी वैध नामांकन से परोक्षा पाया होने में अमरमर्थ होता है तो अथवा महोदय की दृष्टिकोण से उस अभ्यर्थी को परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए एक अधिक अवधार दिया जाना हो।"

(iv) अनु. जाति / जनजाति के अभ्यर्थी के मामले में विशेष अनियन्त्रित प्रणिक्षण/पर्यालूर्थत आवश्यक नामांकन हो।"

"विनियम के परिवीक्षाधीन ग्रथित निम्न नियमों में कम की जा सकती है :

(i) परिवीक्षाधीन पायलट पहले भी मार्ट दे में पायलट रह चुका हो और बाद में पुनः दे में आपाय आया हो,

(ii) अगर भवित्व में प्रणिक्षण के लिये अनुसार सिम्मेट्रिक जैसी प्राधिक टेक्निकलाजी इसेक्षण की जाए।"

(iii) विनियम (11) में शब्द "नी" के बदले अद्वा "बारह" रखा जाए।

(iv) विनियम ४९ में दर्तमान विनियम से शब्द निम्न प्रावधान शामिल किया जाए :

"विनियम के कोई भी पायलट अथवा प्रावधान का आदेश प्राप्त होने के बाद सात दिनों के अद्वा मंडल को प्रतिवेदन कर सकता हो एवं मंडल उम्पर जैसा उचित समझे, वैसे आदेश देंगे।"

[का. स. पा. आर. १२०१६/३२/७१ फैफ-१]
अग्राक जीर्णा, समृद्ध भवित्व

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Ports Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 13th May, 1992

G.S.R. 487(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 124, read with sub-section (1) of section 132 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Central Government hereby approves the Bombay Port (Licensing and Control of Pilots) Amendment Regulations, 1992 made by the Board of Trustees of the Port of Bombay and set out in the Schedule annexed to this notification.

2. The said regulations shall come into force on the date of publication of this notification in the Official Gazette.

SCHEDULE

BOMBAY PORT (LICENSING AND CONTROL OF PILOTS) REGULATIONS, 1975

In exercise of the powers conferred by clause (d) of section 28 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Board of Trustees of the Port of Bombay with the approval of the Central Government, as required by sub-section (1) of section 124 of the said Act, hereby makes the following regulations, further to amend the Bombay Port (Licensing and Control of Pilots) Regulations, 1975, namely :—

1. Short title and commencement—

(i) These regulations may be called the Bombay Port (Licensing and Control of Pilots) Amendment Regulations, 1992.

- (ii) They shall come into force on the date of publication of the sanction thereto of the Central Government in the Official Gazette.
2. In the Bombay Port (Licensing and Control of Pilots) Regulations, 1975—
- (i) In sub-regulation (1) of regulation 6, the following may be added as sub-regulation (1A) :
- “(1A) The licence may be revoked by the Chairman in circumstances such as :
- (a) proven misconduct and/or misconduct under the conduct and discipline rates;
 - (b) professional misconduct;
 - (c) shipping casualties (accidents) where professional competence is questioned or negligence proved after enquiry into the accident;
 - (d) where formal court of enquiry instituted into marine casualty holds Pilot responsible for an accident;
 - (e) on cessation from service if the licence is not surrendered as required under regulation 6(2);
 - (f) on being medically found unsuitable for pilotage jobs.”
- (ii) in clause (c) of sub-section (1) of regulation 8 following proviso may be added—
“Provided that the period of probationary training may be extended beyond six months for sufficient and valid reasons such as—
- (i) candidate is unable to complete required phases of training due to his own illness, or has to proceed on leave for sufficient and valid reasons or due to any national emergencies, etc.;
- (ii) in the interest of Bombay Port Trust or Government of India, a Probationary Pilot is required to be allotted some other duties (with prior agreement) such as Dredging Master, Berthing Master, etc. and is thus unable to complete his training requirement;
- (iii) candidate for valid reasons is unable to pass his examination during the stipulated period of twelve months (under regulation 11) and in the view of Chairman, needs to be given a fair chance to pass examination;
- (iv) in case of candidates belonging to SC/ST, special extra training/guidance is deemed necessary.”
“Provided further that the period of probation may be curtailed under the following circumstances:
- (i) if the Pilot on probation has been a Pilot in BPT and has rejoined BPT subsequently.
- (ii) if in future modern technology such as a simulator is used for training.”
- (iii) In regulation 11 for the word ‘nine’ the word ‘twelve’ may be substituted.
- (iv) In regulation 49 after the existing regulation the following proviso may be added :
“Provided that any pilot may within sixty days of the receipt of the order of the Chairman make a representation to the Board and the Board may make such orders thereof as it deems fit.”

[F. No. PR-12016[32]91-P.E.1]
ASHOKE JOSHI, Jr. Secy.

